PROF. M. B. LAL (Uttar Pradesh): When such big statements which are to be made here are laid on the Table, then those statements should be circulated to the Members of Parliament. Last time when Mr. Kabir made a long statement and we said that it would be taken as read, that statement was not circulated to us and therefore unless we go to the Library, we have no access to that. I feel that in case a statement is made which is a big one which is taken as read, the copies thereof should be supplied to the Members of the House.

MR. CHAIRMAN": I agree. The other statement, was circulated and l.his would be circulated too.

SHRI O. V. ALAGESAN: Sir, I lay the statement on the Table. *[See* Appendix, LIU. Annexure No. 33]

RESOLUTION RE. COMPULSORY PHYSICAL AND RIFLE TRAINING TO EVERY ABLE-BODIED MALE CITIZEN IN THE COUNTRY BETWEEN THE AGES OF 20 AND 35 YEARS

SHRI M. SHAFI QURESHl (Jammu and Kashmir): Sir, I move the following Resolution:

"This House is of opinion that Government should take steps to impart compulsory physical and rifle training to every able-bodied male citizen in the country between the ages of 20 and 35 years."

MR. CHAIRMAN; Before you begin, i may say that according to the Rules, you would be allowed thirty minutes anj the Minister concerned, when he replies, will be allowed thirty minutes and the other Members fifteen minutes.

श्री एम० शफी कुरेशी : जनाब चेयरमैन साहब, मैं यह क़रारदार इस उम्मीद पर इस मुअज्जिज एवान के सामने रखता हूं कि मौजूदा हालात को देख कर, जिन हालात में हमारा मुल्क इस समय गुजर रहा है, इस पर इन्तहाई संजीदगी से गौर किया जायेगा । 1947 में जब हमने अंग्रेजों की गुलामी से आजादी हासिल की तो उस वक्त हम एक जद्दोजहद के दौर से गुजरे और उसके बाद हमने तामीर और तरक्की का काम शुरू किया । लेकिन महज आजादी हासिल करना ही काफ़ी नहीं होता । आजादी का तहफ्फुज अंदरूनी दुश्मन और बैरूनी दुश्मनों से करना जरूरी होता है । बदकिस्मती यह हुई कि कुछ अरसे के बाद ही, 1947 में ही, हमारे एक हमसाये मुल्क से ताल्लुकात खराब हो गये और 1947 में ही हमने देखा कि हमारे वतन पर यलगार हमले किये गये और हमारी बड़ी रियासत का एक हिस्सा दुश्मन के कब्जे में चला गया । तो इस तरीके पर भी दुश्मन शुमाल की तरफ है जिसमें चीन सबसे बड़ा दुश्मन है और उसके इरादे हमारे मुल्क के निस्बत अच्छे नहीं रहे हैं । हमने देखा कि हम आड़ हाथ पकड़े गये और उसने हमारे मुल्क पर हमला किया । यह ठीक है कि हमारी फौजों ने, मुसल्ला फौजों ने जिन पर हमें वाकई फख्र होना चाहिये, निहायत शानदार काम किया है । हमारी फौज ने उस हालत में जब कि जंग के हालात थे बड़े शानदार कारनामे करके दिखलाये और मुल्क की इज्जत व वकार को बचाये रखा । अमन की हालत में भी हमारी फौजों ने जहां कहीं सैलाब या कोई वाकया पेश आया, वहां पर उन्होंने बड़ा शानदार काम किया है । उस समय हमारी फौजों ने चाहे बरी हों, बहरी हों या हवाई फौज हों, व सब मुबारक के मुस्तहक हैं । लेकिन सबसे बड़ी जरूरी चीज जो इस वक्त हमारे मुल्क के सामने पेश है, जो हालत हमारे ऊपर इस समय ठूंसी गई है, उसको मद्देनजर रख कर हम सब लोगों को मुल्क के अन्दर एक नई बेदारी पैदा

[श्री एम० शफी करेशी]

करनी चाहिये क्योंकि जब तक आम इन्सान हमारी फौजों के साथ शाना व शाना मिल कर नहीं चलेगा और दुश्मन को इस बात का एहसास न दिलाया जायेगा कि वतन की दिफा के लिए हम सब कुछ करने के लिए तैयार हैं, अपने खून का आखिरी कतरा तक बहाने के लिए तैयार हैं, तब तक दुश्मन के हौसले पस्त नहीं हो सकते हैं ।

यह जो रेजोल्यूशन आपके सामने रखा गया है, उसमें सबसे बड़ी बात यह है कि आपने देखा होगा कि मुल्क के सामने इस तरह के वाकयात पेश आते रहते हैं और हमारी सरहदों के साथ साथ खवाह वह मशरिक की सरहदें हों, मगरिब की हों या शुमाल की हों, दुश्मन दूसरी तरफ से आकर कभी-कभी माल मवेशियों को चुराकर ले जाता है और जो लोग हमारे गांवों में सरहदों के करीब रहते हैं, वे बेचारे अगर बाहर से कोई दो आदमी मुसल्ला तौर पर अन्दर आ गये तो इस कदर घबरा जाते हैं कि वे माल मवेशी दे देते हैं और बाद में पुलिस को रिपोर्ट करते रहते हैं । तो उस चीज के लिए जहां अन्दरूनी दिफा का ताल्लुक है, यह बहुत जरूरी है कि हमारी सरहदों के साथ जहां जहां पर गांव हैं, जहां इस किस्म के वाकयात पेश आते हैं, चाहे वे लोग पाकिस्तान के हों या चीन के हों, वे हमारी सरहदों के अन्दर दाखिल हो जाते हैं, देहात के लोगों को परेशान करते हैं और उनका माल मवेशी चुराकर ले जाते हैं । इसलिये हम चाहते हैं कि सबसे पहले इस तरह की तरबियत शुरू करें । इस तरह की तरबियत का जो प्रोग्राम हो वह तमाम हिन्दुस्तान में दी जानी चाहिये, लेकिन मैं सबसे ज्यादा अहमियत इस बात को दूंगा कि इस तरह का प्रोग्राम पहले सरहदी इलाकों में शुरू किया जाना चाहिये क्योंकि वहां पर जो हमारे लोग रहने वाले हैं---देहाती भाई रहते हैं या दूसरे बाशिन्दे रहते हैं---उनको यह एहसास होना चाहिये कि वे बन्दूक चला सकते हैं । जब उन्हें इस तरह का एहसास होगा कि उन्हें तरबियत इस बात की दी गई है और अगर दुश्मन आड़े हाथ किसी वक्त लेने आये तो वे तैयार रहेंगे और उसका मुकाबला कर सकेंगे । अगर सरहद के लोगों को इस तरह की तरबियत दी जायेगी तो उनके हौसले बुलन्द होंगे, उनके अज्म इरादों में कोई फर्क नहीं आयेगा और वे दुश्मन का मुकाबला कर सकेंगे । इस तरह से हमारी फर्स्ट लाइन आफ डिफेंस बनेगी । इसके अलावा और जगहों पर स्मगलर्स आते हैं जो माल वगैरह ले जाते हैं । अगर हम इस तरह की तरबियत लोगों को देंगे जो कि सरहदों में रहते हैं तो बाकी इलाकों में भी इस तरह की चीज रोकी जा सकती है ।

सबसे अहम मसला जो हमारे सामने है वह यह है कि पाकिस्तान ने काश्मीर पर 1947 के बाद दूसरी दफा बुलगार किया है । 1947 से ले कर आज तक जो 470 मील की सीज-फायर लाइन है उसके साथ साथ हमारे गांव और काफी देहात हैं । लेकिन आज तक हमने कभी भी उन गांव वालों को न राइफिल की ट्रेनिंग दी और न उन्हें सेहतमन्द तरीके पर कोई ऐसी ट्रेनिंग दी जिससे कि वे दुश्मन का मुकाबला कर सकें । आखिर जो हमारी फौज है वह तमाम सरहद पर फैली तो नहीं है । 470 मील लम्बी जो हमारी सरहद है उस पर जो स्ट्रैटेजिकली खास जगह हैं, वहां पर हमारी फौजें हैं ताकि दिफा के लिहाज से उन जगहों की हिफाजत की जा सके । लेकिन बीच का जो रास्ता है वह खुला पड़ा हुआ है और इस खुले रास्ते से ही काफी लोग आये, इनफिलट्रेटर्स हमला करने के लिए आये । अगर वहां पर हमारे लोगों को बाकायदा तौर पर राइफिल ट्रेनिंग दी गई होती, उन्हें ऐसे मौकों पर दुश्मन का मुकाबला करने की ट्रेनिंग दी गई होती,

तो मैं आप से यकीन से कह सकता हूं कि जो हमलावर वहां पर आये थे उनका इस्तकबाल सबसे पहले वहीं लोग गोली से करते, बजाय इसके कि वे लोग 20–25 मील सरहद के अन्दर चले जायं। इसलिये जब इस तरह के लोग आये तो देहात के लोग कुछ डर की वजह से और कुछ खौफ की वजह से अपने-अपने घरों को छोड़ कर भाग गये और उन लोगों को इन से किसी किस्म का तआवुन नहीं मिला। अगर आप चाहते हैं कि हमारे लोग इस तरह के बाहर के लोगों का मुकाबला करें तो उन्हें आपको इस तरह की तरबियत देनी होगी। आपने देखा होगा कि जब सरहद के पार से पाकिस्तानी रेडर्स आये तो हमारे यहां के निहत्थे लोगों ने उनका मुकाबला किया और मैं वसूक के साथ कह सकता हूं कि वहां पर बहुत से लोग ऐसे है जिन्होंने उनका निहत्थे हाथों से मुकाबला किया और जिनमें गुलाम कादिर और अली मुहम्मद पटवारी और दूसरे लोग भी शामिल हैं। इन लोगों ने रेडर्स के हाथों से गोली खाई और अगर इन्हें तरबियत दी होती तो—इस तरह का वहां पर कोई प्रोग्राम बनाया होता, तो—मैं समझता हूं कि वे लोग और भी बहादुरी से उनका मुकाबला करते। मैं समझता हूं कि हमें संजीदगी से इस ओर गौर करना चाहिये। मुमकिन था कि ये लोग बजाय वतन की दिफा करते हुए शहीद हो जाते वे दुश्मन को मार भगाते और उनको जिन्दा पाकिस्तान वापस जाने न देते। तो इस चीज को मद्दे नजर रख कर, न सिर्फ यहां पर, काश्मीर की सरहदों पर, बल्कि तमाम बार्डर एरिया पर, लद्दाख से ले कर पंजाब की सरहदों तक और मशरिक में आसाम बंगाल के बार्डरों पर ज ' रोजमर्रा इस तरह की गड़बड़ होती रहती है, वहां के लोगों को इस तरह की तरबियत दी जानी चाहिये। हमारी इन सरहदों पर यह मसला हर कदम पर दरपेश है और हम हर जगह पर अपनी फौज को नहीं रख सकते हैं। लेकिन हम इतना जरूर कर सकते हैं कि जितने सेहतमन्द लोग हैं, जिनकी 20 साल से 35 साल तक की उम्र है, उनको बाकायदा फौजी ट्रेनिंग दी जाय, उनको बाकायदा राइफिल ट्रेनिंग दी जाय ताकि वे हमारी सरहदों की हिफाजत कर सकें। इसके साथ ही इन लोगों को एल० एम० जी० लाइट मशीनगन की और स्टैनगन की भी ट्रेनिंग मिलनी चाहिये ताकि किसी वक्त पर भी मुल्क पर कोई नागहानी या कोई आपत्ति आ जाय, जब मुल्क में कोई यल्गार दुश्मन की तरफ से हो तो जो हमारी बहादुर फौजें हैं, वे उनके साथ मिल कर शाना ब शाना लड़ने के लिए तैयार हो जायं।

आपने देखा होगा कि सरहद के इलाके पर जो हमारी पुलिस चौकियां हैं, वे 20–25 मील के फासले पर हैं। हमारी सरहदों पर हमेशा गड़बड़ होती रहती है, बाहर के लोग आते जाते रहते हैं, कभी हमला करते हैं कभी आग लगाते हैं और कभी गांव के मवेशियों को भगा ले जाते हैं। जब तक पुलिस को इन्फारमेशन पहुंचती है तब तक सारे गांव का सफाया हो जाता है। अगर इन इलाकों पर वहां के लोगों को तरबियत दी गई, राइफल इस्तेमाल करना सिखलाया गया, तो इस तरह की वारदातें बहुत कम हो जायेंगी।

मैंने जो यह रेजोल्यूशन पेश किया है उसका मतलब यह नहीं है कि हर घर में बन्दूक या तोप रख दी जाय, लेकिन कम से कम यह तो होना चाहिये कि जहां पर हमारे पुलिस के जवान हैं जो कि दूर दूर पर हैं, यहां पर इस तरह के अ[illegible] का काफी जखीरा होना चाहिये और वहां लोगों को इस तरह की तरबियत मिलनी चाहिये। उन लोगों को बन्दूक और एल० एम० जी० की ट्रेनिंग दी जानी चाहिये

[श्री एम० शफी कुरेशी]

ताकि वे अपना बचाव कर सकें और किसी भी वक्त जब दुश्मन शाम के वक्त चोरी छिपे आये उसका मुकाबला कर सके । यह मैं इसलिये कहता हूं कि जो दुश्मन है, वह बहुत ही अन्डरकूपलस है, मक्कार है और और अय्यार है । उसने हमारे मुंह से हमेशा अमन की बात सुनकर हमको गलत समझा है । हमने हमेशा यही कोशिश की कि जंग न हो और हकीकत यह है कि हम जंग नहीं चाहते हैं लेकिन वह इस तरह की हालत करता चला आ रहा है जिससे जंग का महोल बढ़े । इसलिये पहली बात यह है कि हमें जंग के लिए तैयार रहना चाहिये क्योंकि हमारे ऊपर जंग ठूंसी गई है । हमें बुजदिल और कमजोरों की तरह मरना नहीं चाहिये बल्कि अपना सीना तानकर दुश्मन का मुकाबला हिम्मत और ताकत के साथ करना चाहिये ।

इस चीज को मद्देनजर रख कर, जनाब वाला, मैं यह अर्जदास्ता करता हूं कि सरहद के ऐसे इलाकों पर जहां थाने हैं वहां पर हथियारों का काफ़ी जखीरा होना चाहिये ताकि जब इस तरह के मामले पेश आयें उस वक्त सरहद के लोग दुश्मन का मुकाबला कर सके और फौज के साथ साथ ये लोग भी उसकी मदद करें जिन्हें इस किस्म की तरबियत दी जायेगी । अगर हमने इस तरह की तरबियत सरहद के लोगों को दी तो फर्स्ट लाइन आफ डिफेन्स बन कर हमारी फौज के साथ-साथ मिल कर दुश्मन का मुकाबला कर सकेंगे ।

अगर हमने इस तरह की तरबियत का प्रोग्राम शुरू किया तो इससे एक फायदा यह होगा कि कौमी यकजहती का जजबा लोगों के अन्दर खुद ब खुद पैदा हो जायेगा । इस चीज के साथ ही साथ वहां हम अपनी ताकत को बढ़ायेंगे वहां पर यह भी जरूरी है कि पैट्रोटिज्म को भी हम उसके साथ ही साथ बढ़ाते चले जायं और पैट्रोटिज्म, हुब्बुलवतनी का जो जजबा होता है, वह इसी तरह की चीज से पैदा हो सकता है कि आप सारे इलाकों पर जहां पर हिन्दू मुसलमान, सिख, मुत्तफिक तौर से रहते हैं उनको इस तरह की तरबियत दें ताकि वे शाना व शाना दुश्मन का मुकाबला कर सकें । अगर आपने इस तरह की तरबियत दी तो कभी भी हमारे मुल्क के ऊपर दुश्मनों का यलगार नहीं होगा । अगर इस तरह का जजबा पैदा होगा तो कुदरती तौर पर कौमी यकजहती का जजबा उभरेगा और जो हम पैट्रोटिज्म को, हुब्बुलवतनी की बात करते हैं, जिसको उभारना चाहते हैं, वह भी अपने आप उभर आयेगी । कोई भी कौम महज ताकत बढ़ाने से जिन्दा नहीं रह सकती है । अगर ताकत के साथ जजबा न हो तो गैरत, हुब्बुलवतनी, पैट्रोटिज्म और कौमी यकजहती की ताकत, वह तब तक बेमानी होती है । ताकत का इस्तेमाल इन्सान सही तौर पर तब ही कर सकता है जब उसमें हुब्बुलवतनी होती है । तो इस स्कीम के तहत एक खास ग्रुप के एज के लोगों को जहां पर इस तरह की तरबियत देंगे, वहां पर इन लोगों की सेहत भी बढ़ेगी क्योंकि उन्हें रोजाना वर्जिश करनी पड़ेगी । इस तरह से हमारे मुल्क में चार, पांच करोड़ लोग ऐसे काबिल हो जायेंगे जो वक्त के समय सरहदों की हिफ़ाजत कर सकेंगे और साथ ही ये लोग काफ़ी सेहतमन्द भी हो जायेंगे । जब इन्हें राइफिल ट्रेनिंग मिल जायेगी तो इनमें एतमाद और हिम्मत पैदा हो जायेगी । आदमी बजात खुद कितना बहादुर क्यों न हो, लेकिन हमने देखा है कि हमारे लोग बहादुरी में कम नहीं हैं । हमारे लोग इस वक्त सरहदों पर रहते हैं और सरहदों के साथ साथ हमारे ऐसे इलाके हैं जो कि पाकिस्तान और चीन की सरहदों से मिली हुई है और फिर भी हमारे हिन्दुस्तान के लोग इन सरहदों पर अपनी जमीन को आबाद करते हैं और काश्तकारी करते हैं । तो बहादुरी का जजबा तो उनमें

मौजूद है, लेकिन एतमाद तो तभी पैदा हो सकता है जब उन्हें यह मालूम हो कि वे अपना बचाव भी कर सकते हैं और दुश्मन को मार भगा भी सकते हैं । इस स्कीम के तहत हम उन्हें तरबियत देंगे और तरबियत राइफल चलाने की देंगे, अपनी दिफ़ा करने की देंगे कि ऐसे हालात में उनको किस तरीके पर अपने इलाक़े को बचाना चाहिये और कुओं का किस तरह तहफ्फुज करना चाहिये । ऐसा भी हो सकता है कि दुश्मन यह सोचे कि जो सरहद के क़रीब क़रीब के इलाके हैं, वहां कुओं में या नदियों में जहर मिला दो या वह कोई तख़रीबी कार्रवाई करें, आग लगाने की कोशिश करें, बाम्ब एक्सप्लोड करने की कोशिश करें । तो ऐसी चीजों में भी हमें उन इलाकों के लोगों को, जो कि सरहद के साथ साथ रहते हैं, और बाकी लोगों को भी अच्छी खासी महारत देनी चाहिये । और तरबियत देनी चाहिये ताकि जब भी ऐसा मामला उनको दरपेश हो और जब कि मुल्क पर कभी यलगार हो, तो वे मुल्क को बचा सकें इन चीजों से और कोई आग न लगा सके, कोई जहर न मिला सके या कोई अचानक हमला न कर सके । तो इससे यह बात भी होगी कि जहां पर हम एक सेहतमन्द कौम बनेंगे और कौम का बचाव होगा, वहां तीसरी बड़ी चीज जो हम इनकलकेट करेंगे इन नौजवानों में, वह है सेंस आफ डिसिप्लिन, और जब तमाम लोग इस तरबियत के लिये तैयार हो जायेंगे, तो मुझे यक़ीन है कि हमारा यह एक पार्टिकुलर एज ग्रुप, बड़ा डिसिप्लिन्ड एज ग्रुप होगा । यह तो हम आये दिन शिकायतें सुनते रहते हैं कि आज फलां यूनिवर्सिटी में इस किस्म का मामला हुआ, फलां जगह पर यह गड़बड़ हुआ, और वहां पर भी इन चीजों में इसी एज ग्रुप के लोग ज्यादा हिस्सा लेते हैं क्योंकि बेकारी की वजह से या और चीजों की वजह से इनमें फ्रस्ट्रेशन होता है । लेकिन अगर हम इस स्कीम पर अमल करें, तो हम उन लोगों को इकठ्ठा कर के, उनमें वतन की मुहब्बत का जज्बा पैदा कर के, नेशनल इंटिग्रेशन का जज्बा पैदा कर के, उनको मुनज्जिम भी बना सकते हैं और उनको डिसिप्लिण्ड भी बना सकते हैं ।

अब एक बात और भी है । हमने देखा है कि राजस्थान के इलाके में पाकिस्तान की तरफ से कभी कभी इस किस्म की कार्रवाईयां होती हैं कि वे हमारे इलाके में चुपचाप घुस आते हैं, वहां पर लोगों को परेशान करते हैं । इन तमाम चीजों को मद्देनजर रख कर मैं इस मुअज्जिज ऐवान से यह दरख्वास्त करूंगा कि यह जो तरबियत का प्रोग्राम है इस पर जल्द से जल्द हुकूमत को चाहिये कि वह अमल करे ।

कुछ नोटिसें अभी मैंने देखी हैं । गुजराल साहब ने और चौरड़िया साहब ने इसमें कुछ तरमीमें की हैं । जहां तक इन दोनों तरमीमों का ताल्लुक है, यह बाद में पेश होंगी, लेकिन जाती तौर पर मैं इनसे मुत्तफ़िक हूं कि वहां लोगों को असलहा दिये जाने चाहिये, बन्दूकें दी जानी चाहिये ताकि वह लोग अपना तहफ्फुज कर सकें । मौजूदा हालात का तक़ाजा यही है कि जिस तरीके पर इस वक्त हमें आड़े हाथों लिया जाता है, हम तो अपनी तरफ से कोशिश करते हैं कि हम अपने हमसाया मुल्कों के साथ अमन से रहें, शांति से रहें, लेकिन सवाल यह है कि वह लोग अमन की जबान समझते नहीं हैं । उनसे हमें उसी जबान में बात करनी होगी, जो जबान वे समझते हैं । अगर हमने आजकल उनसे अमन की बात की, तो उन्होंने यह समझा कि शायद यह कौम बुजदिल है और जब भी हम इन पर जंग करना चाहें तो जंग से इनको परेशान कर सकते हैं । लेकिन आज वक्त आ गया है जब कि सारी कौम को यह फैसला करना होगा कि जब भी दुश्मन हम पर यलगार करना चाहे, तो हमें भी उसके लिये

[श्री एम० शफी कुरेशी]

तैयार रहना चाहिये कि हम उसका मुक़ाबला कर सकें। तैयारी सिर्फ फौज की नहीं तैयारी मजमुई तौर पर सारी क़ौम की होनी चाहिये। इस लिये ज्यादा जरूरी है कि इस एज ग्रुप के लोगों को, ऐसी उम्र के लोगों को, जो कि तरबियत हासिल कर सकते हैं, जो कि सेहतमन्द हैं, उनको हम इस किस्म की तरबियत दें ताकि जिस वक्त भी हमारे मुल्क पर कोई यल्गार हो, कोई हमला हो, उस वक्त वे पेशपेश हों और इस मुल्क का बचाव कर सकें।

इन अल्फ़ाज के साथ मैं उम्मीद करता हूं कि यह रेजोल्यूशन हाउस के सामने है और इसको पास किया जायगा।

The question was proposed.

SHRI V. M. CHORDIA (Madhya Pradesh):Sir, I beg to move:

2. 'That, in the resolution,—

(i) for the figure '20' the figure '15' be substituted; and

(ii) for the figure '35' the figure '40' be substituted."

SHRI I. K. GUJRAL (Delhi); Sir, I beg to move;

1. 'That at the end of the resolution, the following be added, namely: —

'and equip every such person living in the areas on our borders with China and Pakistan with arms and ammunition for self-defence against aggression."

The questions *were proposed.*

SHRI G. RAMACHANDRAN (Nominated) : Sir, 1 am grateful to have this early opportunity of speaking on the Resolution that has just now been moved by my hon. friend Shri Qureshi, He has already the look of a young Captain or Major in the Army and I hope some day he will become a Major in the Indian Army. He will make a very good Major.

AN HON. MEMBER: Why not a General?

SHRI G. RAMACHANDRAN: But today we are dealing with a big problem. At the very outset, I want to make it absolutely clear that I am not standing here now as a preacher of Ahimsa, I am not standing here as the expounder of non-violence. I know, the floor of this House is not the place to expound non-violence, T also know that the present occasion is not one in which any appeal on behalf of non-violence will get a good hearing in this country. It. is not on those grounds, I wish to speak, and I would very greatly hesitate to appear to expound nonviolence in the Rajya Sabha. 1 remember a speech delivered yesterday or the day before by one of the new lady Members of this House who, referring to the Leftists among the Communists who are now in prison asked: "Why are they making these demands? Why are they asking for this and that? Let them be grateful that they are allowed to be alive in this country."

SHRI P. N. SAPRU (Uttar Pradesh): Oh, my God.

SHRI G. RAMACHANDRAN; Now when this is the kind of non-violence of the ruling party, am I likely to expound non-violence in such an atmosphere? There was another speech recently, Sir, by Mr. Raghu-nath Sharma, a former Secretary of the ruling Congress Party.

AN. HON. MEMBER: He is Shri Raghunath Singh.

SHRI G. RAMACHANDRAN; Yes, Shri Raghunath Singh. 1 am sorry. He said somewhere . .

AN HON. MEMBER: In Lok Sabha?

SHRI G. RAMACHANDRAN: . . . that there would be external conflict between Pakistan an<j India and that India must get ready to deal with an everlasting enemy. So I

make it clear at the very outset, that it is not on those grounds, on the grounds of non-violence that I am taking my stand here. I object to this Resolution very strongly at the point where it states that we must introduce compulsory military training for every able-bodied man in thi? country.

£ SHRIMATI SHAKUNTALA PARANJPYE (Nominated): And women too.

SHRI G. RAMACHANDRAN: I am glad that the lady Member to my right would also come in to shoulder arms. But I wonder what arms she can hear. Even during the Second iVorld War, when India was surrounded by danger as imminent as it is today, even more imminent, the Bri- tish Government had the good sense not to make military training compulsory in this country.

(Interruptions)

AN HON. MEMBER: They were afraid.

SHRI P. N. SAPRU: May I point out that some British statesmen opposed conscription even in . . .

SHRI G. RAMACHANDRAN: Even in England?

SHRI P. N. SAPRU: Yes, even in England.

SHRI G. RAMACHANDRAN; i am grateful that at least a solitary voice in this crowded House is realising what I mean. What was it that I was saying Sir? i am not comparing what the foreign Government did here with what is happening in this country today.

(Interruptions).

MR. CHAIRMAN: Order, order.

SHRI G. RAMACHANDRAN: I was not doing that. Even when we were surrounded by danger, we had no compulsory military training at that time. Why Sir, because it is un-necessary in this country, mis compulsory military training. You make training available to all those who want it, and there will be lakhs who will take it. In fact, in the old days of British rule, ,the growing Indian army was called the 'rice army'. People poured into the army at that time. So, Sir, this kind of compulsory military training is totally unnecessary in this country. Where will compulsory training of every able-bodied man— and she has added woman— lead this country? God save us! The training of innumerable millions*in ,this country in the use of weapons of war is a completely impossible proposition. Take the National Cadet Corps. We are told that the N.C.C. is not able to function effectively because there are not adequate officers to train them and there are not enough rifles to go round. What then are we asking for in this particular Resolution? it says "Train every able-bodied man to use arms in the country". Many millions will need to be trained and where are you going to get the necessary arms from? It is a completely impracticable pro-sition.

Only two days ago I was at the Delhi University. I went there to inaugurate a Students' Union. Students came and talked to me after the meeting was over and they talked to me about the National Cadet Corps. They said, "So long as this was kept on a voluntary basis we loved it. took it and went, on with it but today it is compulsory and we are no longer enthusiastic. We have not the same interest in it any more. The whole thing has become machanical." Have we got the resources to take on every able-bodied adult and give him training? To think we can is just moonshine. You cannot do it. *(Interruption).* This cry "do nothing?" is a false cry against what I advocate. I am not saying " do nothing". I will be unworthy to be a Member of this House and to be a citizen of this country if I said, when there is aggression, "do nothing". But I am not dealing

[Shri G. Ramachandran.]

with that bigger issue as to what we can or must do. I am only dealing with this particular Resolution which calls for universal compulsory military training. I say that it is impracticable, I also say it is unnecessary and we shall merely earn an odium for nothing. We have enough problems in this country; why then cre?tc another problem? You have the Kerala problem, you have the Punjab problem and you have the Kashmir problem and so many other problems. *(Interruption).* Some one says that these are not problems. He is living in a world of his own. There are not problems for him and therefore no solutions are necessary. But I do say that we have all these problems. By introducing compulsory military training you will create another problem,

I want to warn this House with all the earnestness I can command that you will create another problem in this country. Having said that you will get any number of people voluntarily to whom you can offer this kind of training and having also said thax nobody in this country, not even I who advocate non-voilence, would prevent a man from going in for military training. I would add that you would create another problem if you begin compulsory military training of people. That problem will be raised by those like me in this country, people who work under Acharya Vinobha Bhave, people who belong to the non-voilent group in this country of which I am not ashamed to be one. Non-violence is the thing that must grow and voilence is the thing that must disappear if the world is to survive. I am in the shin that will sail; the others who attack non-violence are in the ship that will sink. Let me repeat, "Don't create a new problem". If you make military training compulsory in this country, there vil[1] be a movement in this country to -2sist compulsory military training, l mil resist it with all the strength in me 'and there will be a million people to resist it with nv. So, do not make the mistake of thinking that il you pass this Resolution you can so easily make military training compulsory. Do not take on an odium vhich is unnecessary. You have plenty of people in this country who will t'ake to military training for the asking. Give them the training. Even that you will not be able to do, as you are not able to do with the National Cadet Corps.

Finally, Sir, I realise that this country is not Gandhi's country today; I realise that this Government is not a (fandhian Government today. I quarrel with none on these counts. Let us not forget Gandhi so completely, however, as to compel every able-bodied man in India to be trained in Die art of killing. Let us not do that! With this appeal, Sir, let me conclude my brief remarks on the Resolution.

[THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M P. BHARGAVA) in the Chair],

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : उपसभाध्यक्ष महोदय, श्री शफी साहब ने प्रस्ताव रखा है, मैं उसका समर्थन करता हूं। उनका भाषण भी सुना और आदरणीय रामचन्द्रन् साहब का भाषण भी सुना। देश की परिस्थिति अगर देखी जाय–वैसे तो हमारे यहां के सेंसर बोर्ड ने हमारे देश में 'प्यार किया तो डरना क्या', 'बोल राधा बोल संगम होगा कि नहीं'' ऐसे सब खराब संस्कार हमारे देश में डाल दिए कि यदि यहां पर पाकिस्तान या चीन का जोरदार हमला प्रारम्भ हो तो हमारे यहां के लोग यह गाना गाना प्रारम्भ कर देंगे, राइफलों की बातें तो याद आयेंगी ही नहीं।

एक तो हमारे यहां इस तरह के संस्कार डाले जा रहे है, दूसरी ओर हमारे कथित अहिंसा के पुजारी हैं। अहिंसा बुरी चीज नहीं है। अहिंसा की शक्ति या तो पूरी

तरह हो जिस तरह से की गांधी जी ने विदेशियों का सामना किया था जब उनका यहां पर राज्य था और उनके पास बन्दूकें थीं, तोपें थीं, उनके सामने उन्होंने सत्याग्रह का प्रयोग किया था, बल्कि वे और आगे बढ़े और शक्ति उन के हाथ में आ गयी वैसा करने वाले अगर होते तब बात दूसरी थी। आज ऐसा संभव नहीं है। जब चीन का आक्रमण हम पर हुआ उस समय हमारे इन अहिंसा के पुजारियों को चाहिए था कि वे चीन के सामने भी—अपने मिलिटरी वालों को यहां पर रहने देते—स्वयं "रघुपति राघव राजा राम, सबको सन्मति दे भगवान" का नारा लगा कर चल देते और उनका सामना करते तो मालूम होता कि अहिंसा का नाम लेने वाले अहिंसा के पुजारी सचमुच अहिंसा का पालन करने वाले हैं। आज वही स्थिति फिर पाकिस्तान के कारण हमारे सामने है—आज से नहीं बल्कि विभाजन के समय से ही पाकिस्तानी हमारे क्षेत्र में लूट-मार कर जाते हैं, हमारी सीमाओं पर आक्रमण-प्रत्याक्रमण करते हैं, हमारे यहां के लोगों को उठा कर ले जाते हैं, पशुओं को हांक ले जाते हैं, चोरी कर लेते हैं, मगर अहिंसा के ये पुजारी, अहिंसा के सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाले वहां नहीं जाते। वे यहां यह सब कह सकते हैं। मैं भी अहिंसा का मानने वाला हूं लेकिन इस तरह से अहिंसा चलेगी नहीं। अगर यह देश अहिंसा से नहीं चल सकता है और हम अहिंसा से पूरी तरह काम नहीं चला सकते तो हमें शक्ति का सृजन अवश्य करना चाहिये। हम यह नहीं कहते कि हम शक्ति इसलिए अर्जित करना चाहते हैं कि हम उन पर आक्रमण करेंगे, किसी को नष्ट करेंगे, किसी की हिंसा करेंगे; इस दृष्टि से शक्ति नहीं चाहते। बिना शक्ति के कोई भी बलवान नहीं हो सकता, बिना शक्ति के कोई आपकी पूजा नहीं कर सकता, बिना चमत्कार के कोई आपको नमस्कार नहीं कर सकता। अगर आपके पास चमत्कार नहीं है तो कोई आपको पूछने वाला नहीं। जब तक आपके पास शक्ति नहीं है, देश की सुरक्षा आप नहीं कर सकते। शक्ति का कभी यह मतलब नहीं होता, जैसा कि माननीय रामचन्द्रन साहब ने कहा कि सब को मारना ही है या हम इतने लोगों को किलिंग ट्रेनिंग देंगे। अगर हम शक्ति का अर्जन करते हैं तो इसका मतलब कभी यह नहीं होता कि हम शक्ति इसलिए बढ़ा रहे हैं कि हम दूसरों का नाश करेंगे। शक्ति इसलिए बढ़ाते हैं कि सामने वाला हमारे ऊपर आंख उठा कर न देख सके।

आज हमारी कांग्रेस सरकार की कमजोर नीति की वजह से, सरकार की बुजदिली की वजह से, संसार में जहां कहीं भी, भारतीय निवास करते हैं उन सब की ऐसी दुर्दशा हो गई है जैसी लावारिस बच्चे की, बिना बाप के बेटे की हो जाती है। जिस तरह सब कोई उसके थप्पड़ मार देते हैं, सब कोई पीट देते हैं, ठीक उसी तरह से दूसरे देशों में जितने भी भारतीय बसते हैं उनको वहां के लोग भगा रहे हैं, उनकी जायदाद छीन रहे हैं। यहां तक कि ब्रह्म देश में एक महिला की नाक में जो गहना था उसको खींचा गया और उसके खींचने से खून रंगून से दमदम के हवाई अड्डे तक निकलता रहा। जिसकी रिपोर्ट अखबारों में आई थी। यह किस कारण से है, यह हमारी सरकार की कमजोरी और बुजदिली की नीति और कथित अहिंसा की नीति के कारण है। अहिंसा बुरी चीज नहीं है मगर शक्ति के अभाव में, अहिंसा भी काम नहीं कर सकती। अगर आप के हाथ में अहिंसा है तो अहिंसा रखिए मगर उस के साथ ही शक्ति का सृजन कीजिए और हम इसीलिए कहते हैं कि एटम बम बनाइये, अणुबम बनाइये और इसका उपयोग किसी को नष्ट करने के लिए मत करिए मगर इसका उपयोग जब आवश्यकता हो, जब आपके ऊपर कोई आक्रमण करे, जब आपके अहिंसा पालन करने वाले

[श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया]

समाज को नष्ट करने वाला कोई दुष्टात्मा राक्षस मनोवृति वाला, हिंसक मनोवृति के आधार पर आपको नष्ट करने पर आमादा हो तो रक्षा के लिए कीजिए। उसका उपयोग इसलिए न कीजिए कि किसी को नष्ट करना है मगर जब कोई लड़ना चाहता हो तो हम चुपचाप बैठ जांय, जब एटम बम आने वाला हो, चीन की गोली आने वाली हो, पाकिस्तान की गोली आने वाली हो तब वहां गोली के सामने "रघुपति राघव राजा राम" कहें, गांधी जी का नाम लें, भगवान राम का नाम लें, या किसी का नाम लें तो काम नहीं चलने वाला है। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हमारे देश में शक्ति का सृजन किया जाय, शक्ति का सृजन करना बहुत जरूरी है। जब तक हमारे देश में शक्ति नहीं होगी तब तक हम संसार में ऊंचा सिर कर के नहीं चल सकते। हमारे यहां के लोगों को जब तक संगठित नहीं करते, उनको एक सूत में नहीं बांधते तब तक हमारे देश के नागरिक ऊंचा सिर कर के नहीं चल सकते। मुझे बहुत दुःख होता है कि अपने यहां के जितने बड़े छोटे लोग विदेशों में जाते हैं तो उनके साथ अमेरिका वाले, इंग्लैंड वाले हंसी करते है, मजाक करते हैं कि यह पाकिस्तान का और आपका अच्छा तमाशा है कि वह पीटता जाता है और आप देखा करते हो। चीन के बारे में हमने कहा था कि चीन बड़ा शक्तिशाली था और हम दब गए मगर पाकिस्तान के मामले में क्या कहना है। यह तो हमारी दुर्बल नीति का नतीजा है और यह अब काम नहीं कर सकती।

हमारे रामचन्द्रन् जी ने कहा कि बन्दूकें कहां से आएंगी। अरे, बन्दूकें कहां से आएंगी। बन्दूकें नहीं आएंगी तो यह सारा दुनिया का काम कहां से चल रहा है।

SHM G. RAMACHANDRAN; YOU are not able to give even the National Cadet Corps enough rifles for training.

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : श्रीमन्, राइफल की ट्रेनिंग देना और उनके कब्जे में राइफल देना, दो अलग अलग चीजें हैं। ट्रेनिंग एक चीज है, और उसके साथ में बन्दूक देना दूसरी चीज है। बन्दूकें भी आएंगी मगर पहले ट्रेनिंग दे कर के उसको उसके लिए उपयोगी बनाना है। उसको उसके लायक बनाना है। मैंने भी अपनी कालेज की जिन्दगी में बन्दूक चलाने की ट्रेनिंग ली, तीन चार साल तक उसका बराबर उपयोग किया, अगर अब देश के लिये मेरी आवश्यकता हो सकती है या अगर कोई कहीं आवश्यकता पड़े और मेरे मन में यह भावना जागृत हो कि अपने राष्ट्र के लिए अपना जीवन अर्पण करने की तैयारी करूं तो एक बन्दूक लेकर के एक दो हफ्ते की ट्रेनिंग के बाद मोर्चे पर जा कर लड़ सकता हूं। ऐसा न होता तो फिर 'ए' से 'जेड' तक की ट्रेनिंग ले कर के कहीं मोर्चे पर जाना पड़ेगा। ट्रेनिंग में टाइम लगता है। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि इसका इंतजाम हो। बन्दूकें आ सकती हैं, बन्दूकों के निर्माण के लिए भी सब हो जायगा। मगर हमारी सरकार की उल्टी नीति है। जो आदमी अपने खेत की रखवाली के लिए बन्दूक चाहता है या बोर्डर में जो हैं वह चाहते हैं कि बन्दूक मिले और जो पाकिस्तानी चढ़ाई करते हैं, उनको मार कर के भगाएं, जो इसका प्रयोग करना चाहते हैं—मगर हमारी कांग्रेस सरकार अतिक्रमण के बजाय प्रतिक्रमण की नीति पर चलती है, पीछे की ओर चलती है, आगे नहीं बढ़ती है और आगे बढ़ने के लिये अत्यन्त आवश्यक है कि हमारे बोर्डर के लोग ही नहीं बल्कि हमारे सारे राष्ट्र के लोग सशक्त हो जांय,

उनको फिजिकली फिट भी होना चाहिए और मेंटली फिट भी होना चाहिये । मेंटली फिट भी अत्यन्त आवश्यक है क्यों कि उसके हुए बिना शक्ति का सृजन करने वाले जो हैं वह ठीक दिशा में नहीं चलते तो आपस में लड़ाई होने लगेगी, गुरिल्ला वार-फेयर चलेगी, वह बन्दूकें आपस में ही टकराने लगेंगी । तो राइफल ट्रेनिंग के साथ साथ यह भी आवश्यक है कि उनका बौद्धिक विकास किया जाय और उनमें बौद्धिक विकास भी इस दृष्टि से किया जाय कि उन लोगों के मन में देश भक्ति की भावना भरी जाय । जब तक उनका आकर्षण देश के लिए नहीं होता तब तक परिणाम यह होगा कि आपसी झगड़ों में ही वह बन्दूकें चलने लगेंगी ।

प्रो० मुकुट बिहारी लाल (उत्तर प्रदेश): बुद्धि का विकास नहीं, भावों का विकास ।

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : मैं आप के सुझाव को इसमें जोड़ देता हूं ।

तो इस ट्रेनिंग के साथ साथ जो अधिक महत्व की चीज है वह यह है कि हमारे यहां के नागरिकों में देशभक्ति की भावना भरपूर कूट-कूट कर भरी जाय और साथ ही साथ उनको फिजिकली फिट भी किया जाय । अन्यथा आज स्थिति ऐसी है कि हमारे यहां कुछ लोग ऐसे हैं जो अराजकता फैलाने के इरादे से देश में बसे हुए हैं और कुछ लोग ऐसे हैं जो पंचमांगी है ऐसी स्थिति में अगर कम्पलसरी फिजिकल ट्रेनिंग दी गई, कम्पलसरी राइफल ट्रेनिंग दी गई तो अराजकता वाले पंचमांगी भी बंदूक ले लेंगे और जो हम शांति की अपेक्षा करते हैं वह अशांति को बढ़ावा देने वाली बात हो सकती है । इसलिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम देश के नागरिकों में देश भक्ति की भावना कूट कूट कर भरें, अगर हम देश भक्ति की भावना भरते हैं और साथ ही राइफल ट्रेनिंग भी देते हैं, फिजिकल ट्रेनिंग भी देते हैं तो यह सम्भव नहीं है कि एक दो अराजकता वाले, एक दो पंचमांगी उन के सामने कोई गड़बड़ कर सकें क्योंकि ये अराजकतावादी या पंचमांगी केवल एक रहेंगे, और यहां सौ रहेंगे, तो सौ के मुकाबिले में एक टिक नहीं सकता । मगर आज स्थिति क्या है ? हमारी सरकार यदि जो 99 आदमी हैं उनका बौद्धिक विकास नहीं करती, उन के मन में राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत नहीं करती तो परिणाम यह होगा कि हम जो देश में ठीक व्यवस्था कायम रखना चाहते हैं और देश की सुरक्षा करना चाहते हैं वह सम्भव नहीं होगा ।

आज कोई भी आदमी धन संग्रह करता है, कोई भी आदमी किसी चीज का निर्माण करता है, कोई अपना मकान बनाता है तो वह सब से पहले यह देखता है कि मैं उसकी सुरक्षा कर सकता हूं या नहीं, किन्तु यह हमारी कांग्रेस सरकार ही ऐसी एक देखी गई है कि सारे देश का निर्माण करना चाहती है, सारे देशों का विकास करना चाहती है मगर सुरक्षा की ओर ध्यान नहीं देती--अब थोड़े दिनों से देने लगी है परन्तु अभी तक स्थिति ऐसी ही थी । अगर एक आदमी करोड़पति भी होता है और अगर वह अपने धन की रक्षा नहीं कर सकता तो वह दूसरे रोज ही सड़क छाप हो जायगा, उसके पास एक पैसा भी बचने वाला नहीं है । अगर देश का निर्माण करते हैं, बांध बनाते हैं, कारखाने खोलते हैं, उद्योग चलाते हैं और उद्योग चलाने के बाद उनकी रक्षा करने की सामर्थ्य नहीं तो फिर एक बम आकर उसको खलास कर सकता है । इसलिए निर्माण के पीछे निर्माण के रक्षण करने की शक्ति का रखना भी अत्यन्त आवश्यक है जिसकी कि सरकार ने आज तक उपेक्षा की है । इसलिए

[श्री विमलकुमार मन्नालालजी बोरड़िया]

मेरा निवदन है कि जो चौथी पंच-वर्षीय योजना आप बना रहे हैं वह तो जरूर बनानी चाहिए मगर सब से बड़ी महत्व की जो योजना होनी चाहिए वह देश की सुरक्षा की योजना होनी चाहिए। चौथी पंचवर्षीय योजना के निर्माण के पीछे देश की सुरक्षा की शक्ति हो यह अत्यन्त आवश्यक है नहीं तो आज हम चाहे जितनी योजनाएं बना लें, चाहे हमारा डे साहब कितने ही भाषण दे कर बांध बनावें और पंचायती राज्य कायम कर लेवें, मगर वह उपयोगी नहीं हो सकते। जब तक कि आप सुरक्षा नहीं कर सकें। इसलिए सुरक्षा के लिए जब तक हमारी सरकार जागरूक हो कर बिलकुल एकमत को निश्चित कर के आगे नहीं बढ़ती तब तक कुछ काम हो नहीं सकेगा ।

तो सुरक्षा की दृष्टि से जो माननीय शफी कुरेशी साहब ने प्रस्ताव रखा है वह एक कड़ी है और उस कड़ी को बिलकुल कार्य रूप में परिणत करना अत्यंत आवश्यक है । राइफल ट्रेनिंग से अगर अहिंसा नष्ट होने की बात कही जाय या यह कहा जाय कि राइफल ट्रेनिंग से अहिंसावाद बिलकुल समाप्त हो जायगा तो यह मैं नहीं मानता । अहिंसा का अपना स्थान है । अहिंसा कभी भी कम-जोर बनने से नहीं रहती । मैं भी अहिंसा का पुजारी हूं । अगर एक कीड़ी अनजाने में भी मर जाती है तो मुझको बड़ा दर्द होता है, मेरी आत्मा को बड़ा कष्ट होता है । मगर जब देश पर आक्रमण हो, देश पर संकट आया हो, कोई देश की सीमा पर अतिक्रमण करना चाहता हो तो उस समय कीड़ी की क्या बात है अगर पांच इन्द्रियों वाला पुरुष भी आ जावे तो उसकी हत्या की चिन्ता करने वाला नहीं हूं । तो अगर अहिंसा को इस रूप में हमारे माननीय रामचन्द्रन् साहब समझाना चाहते हों कि राइफल ट्रेनिंग देने से हिंसा होगी तो मैं इसको नहीं मानता । देश की सुरक्षा अत्यंत आवश्यक है । यदि आप देश की सुरक्षा नहीं कर सके तो आपके पास जबान भी नहीं रहने वाली है, आपकी जबान पर भी ताला लग जायगा । धर्म की रक्षा के लिए, देश की रक्षा के लिए क्षत्रियोचित कार्य करना आवश्यक है और क्षत्रियोचित भाव तभी आ सकता है जब कि सारे राष्ट्र को सन्नद्ध करें, सारे देश में उसके लिए प्रचार करें और सारे देशवासियों को उसके लिए सक्षम बनावें ।

माननीय शफी कुरेशी साहब ने जो इसमें रखा है कि 20 साल से 35 साल की उम्र वालों को ट्रेनिंग दी जाय उसके बारे में मेरा नम्र निवेदन है कि 20 की जगह 15 कर दिया जाय और 35 की जगह 40 कर दिया जाय । इसका कारण यह है कि 15 साल की उम्र ऐसी होती है जब कि आदमी का विकास होना प्रारम्भ हो जाता है और उसके मन में नई नई भावनाएं जागृत होती हैं । ऐसी स्थिति में अगर उसको उस उम्र में ही ठीक डाइरेक्शन में लगा दिया जाय तो वह आगे जाकर बहुत सफल हो सकता है और राष्ट्र के लिए सहायक हो सकता है ।

इन शब्दों के साथ मैं निवेदन करूंगा कि एक तो मेरे संशोधन को स्वीकार किया जाय और दूसरा निवेदन यह है कि राइफल ट्रेनिंग देने के साथ साथ उनमें देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी जाय नहीं तो ये राइफलें आपस में ही टकराने लगेंगी । धन्यवाद ।

ANNOUNCEMENT *RE* GOVERNMENT BUSINESS

THE MINISTER OF COMMUNICATIONS and PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI SATYA NARAYAN SINHA): Sir. with your permission, I rise to announce that Government Business in this House for the week